परिचय

1. देश और इसके रहने वाले। –अभी जिस कहानी को हम पढ़ेंगे वह हमें उस भूमि का स्मरण करवाएगी जो पुरखाओं, राजाओं और पुरानी वाचा के भविष्यवक्ताओं की गवाह और पन्द्रह शताब्दियों तक पवित्र रही। इसका प्राकृतिक दृश्य आज भी वैसा ही है जैसा शकेम में इब्राहीम द्वारा तम्बू गाड़ने के समय था; बाकी सब बदल चुका है पुराने ज़माने के लोग और नगर खत्म हो चुके हैं या पृष्ठभूमि में चले गए हैं; नये लोग और नये नगर सामने आ गए हैं; कनान अब फलस्तीन बन चुका है, यह नाम उसे पलिश्तीन से मिला है। उनके राष्ट्रीय जीवन के अलग-अलग चरणों के साथ चुने हुए लोगों के नाम बदल गए हैं। आज भी उन्हें उनके पहले नाम इब्रानी से ही पहचाना जाता है। याकूब के समय मिला इस्राएल नाम, राहोबाम के समय विभाजन के बाद उज़री राज्य को मिला; जबकि यहूदा से लिया गया शब्द यहूदी पुराने नियम के अगले भाग और नये नियम के साझे कौमी नाम के रूप में दिया गया। अब वह कौम पहले की तरह अलग नहीं है। जीवन बहुत ही जटिल हो गया है। इसमें बहुत सी नई चीज़ें आ गई हैं। नई राजधानी कैसरिया में या यरूशलेम के प्राचीन पवित्र नगर में, रोमी राज्यपाल अपनी कचहरी लगाता है। सिपाही और रोमी सरकार के लिए कर इकट्ठा करने वाले हर जगह मिल जाते हैं। प्राचीन इब्रानी स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली पवित्र भाषा है और आधुनिक इटैलियन लड़के के लिए लातीनी भाषा सीखने के साथ-साथ इसे भी सीखना आवश्यक है। अरामी साधारण लोगों की भाषा है; जबकि यूनानी भाषा का इस्तेमाल साहित्य में और लातीनी का सरकारी कार्यालयों में होता है।

2. पलिश्तीन के पांच विभाजन। –पलिश्तीन को नये नियम के समय पांच जिलों में बांटा गया था, जिसमें तीन यरदन के पश्चिम में और दो पूर्व में थे। पश्चिम वाले ज़िले ये थे:

क. गलील, उज़र की ओर, देहाती, असभ्य था, जिसमें मुख्यतया यहूदी रहते थे परन्तु अन्यजाति अधिक थे। प्रमुख नगर कफ़रनहूम था, फिर भी गलील सागर के आस-पास के इलाके में नगरों और गांवों की बहुतायत थी।

ख. यहूदिया, जो दक्षिण में था, में अधिक शुद्ध, सभ्य और अमीर यहूदी रहते थे। इसमें बैतलहम का इलाका भी शामिल था जिसका महत्व दाऊद और यीशु के जन्म स्थान के रूप में भी था; हेरोदेस महान द्वारा बनाई गई रोमी राजधानी, कैसरिया और *यरूशलेम* जो दूर-दूर तक फैली कौम का राष्ट्रीय, धार्मिक, *हृदय* और चकमक पत्थर था।

ग. सामरिया, मध्य में, एक दोगली जाति और धर्म, जिससे उनके यहूदी पड़ोसी बहुत घृणा करते थे और वे भी उनसे घृणा करते थे। सूखार, अर्थात प्राचीन शकेम, सामरियों के मन्दिर का प्राचीन स्थल, सबसे अधिक दिलचस्पी वाली जगह थी।

यरदन के पूर्व में बसे ज़िले ये थे –

क. पिरिया, दक्षिण में जिसकी आबादी मुज़्यतया यहूदी थी।

ग. यरदन के पूर्व में उज़री ज़िले का कोई पज़्का नाम नहीं था। इसे कई बार दिकापुलिस (अर्थात दस नगरों का ज़िला) भी कहा जाता है; परन्तु दिकापुलिस में केवल दक्षिणी हिस्सा ही आता था। यह बाशान के प्राचीन राज्य से मिलता-जुलता है, और इसलिए इसे *बाशान ज़िला* कहा जा सकता है। इसमें फिलिप्पुस की चौथाई भी शामिल थी। इसमें मुज़्यतया अन्यजाति और मूर्तिपूजक ही रहते थे। यीशु की सेवकाई पांचों ज़िलों में थी, परन्तु मुज़्य दिलचस्पी यहूदी और गलील में केन्द्रित थी।

3. पलिश्तीन के हाकिम। –*क. रोमी सम्राट।*–पलिश्तीन का प्रबन्ध रोम के सम्राटों के अधीन स्थानीय हाकिमों द्वारा होता था। मसीह के समय, ओज़्टेवियुस (अगस्तुस) कैसर (31 ई.पू.–14 ई) और तिबेरियुस (14–37 ई.) सम्राट थे। नये नियम के इतिहास में बाद के प्रसिद्ध सम्राट ज़्लौदियुस (41–54 ई.), नीरो (54–68 ई.) और वैस्पेसियन (69–79 ई.) थे।

ख. स्थानीय हाकिम।–स्थानीय राजनीति को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है: (1) हेरोदेस महान का राज्य। हेरोदेस महान अपने पिता से मिली गद्दी पर राज करता था। अधीन होने के बावजूद वह मृत्यु तक ऊपर दिए गए पांचों जिलों का राजा था, 4 ई.पू.[1] (2) टैट्रारकी (अर्थात चौथाई था 4 लोगों की सरकार), 4 ई.पू.–41 ई. में हेरोदेस का राज्य उसके तीन पुत्रों में बांटा गया था। अरखिलाउस (मज़ी 2:22) को यहूदिया और सामरिया मिला था। 6वीं ईस्वी में उसने सम्राट से नाराजगी मोल ले ली और उसके राज्य में शाही राज्यपाल नियुज़्त किए गए जिनमें पुन्तियुस पिलातुस छठा था। अंतिपास (हेरोदेस, मज़ी 14:3) को विरासत में गलील और पिरिया मिला। फिलिप्पुस (लूका 3:1) बाशान जिले की चौथाई का राजा बना। चौथे टैट्राक का उल्लेख लूका 3:1 में है। लिसानियास हेरोदेस के परिवार में से नहीं था, और अबिलेने हेरोदेस महान के राज्य से बाहर रहता है। (3) हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम का राज्य, 41–44 ई.।[2] हेरोदेस अग्रिप्पा (प्रेरितों 12:1–23) हेरोदेस महान का पोता था। सम्राट कलिगुला के समर्थन से, पूरा पलिश्तीन उसके शासन में एक था, जिसके साथ अबिलेने लगता था; जिस कारण सुलैमान के बाद किसी दूसरे यहूदी राजा से उसके अधीन अधिक इलाका था। (4) राजा अग्रिप्पा द्वितीय, 44–66 ई.।[3] हेरोदेस अग्रिप्पा की मृत्यु के बाद, एक नया विभाजन हुआ। उसके पुत्र, हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय (प्रेरितों 26:2) को फिलिप्पुस और लिसानियास की दो पुरानी चौथाइयां दी गईं। उसने उन पर और यहूदी राज्य पर यरूशलेम के विनाश तक अर्थात 70 ईस्वी तक शासन किया। शिष्टाचार के कारण ही उसे ''राजा अग्रिप्पा'' कहा जाता है। पलिश्तीन के दूसरे इलाके पुन्तियुस पिलातुस की तरह राज्यपालों के अधीन ही थे। नये नियम में फेलिज़्स, 53–60 ई. (प्रेरितों 23; 24) और फेस्तुस, 60–62 ई. (प्रेरितों 24–26) का ही उल्लेख मिलता है।

पाद टिप्पणियां

[1]मसीह के जन्म से समय की गणना का आधुनिक ढंग चौथी शताब्दी में इस्तेमाल होने लगा। भिक्षु, डायोनिसियुस ऐज़िसज्युस, जिसने तिथि की गणना की, ने चार वर्षों की गलती की। हेरोदेस की मृत्यु सम्भवत: मसीह के जन्म के एक वर्ष के भीतर हो गई थी। [2]37 ईस्वी में होरोदेस अग्रिप्पा प्रथम को पलिश्तीन के उत्तर पूर्वी क्षेत्र को उसके राज्य में शामिल करते हुए राजा की उपाधि दी गई। 39 ईस्वी में गलील और पिरिया को उसके राज्य में मिलाया गया। 41 ईस्वी में उसे यहूदिया और सामरिया दे दिए गए। मैरिल सी. टैनी., व कुछ लेखक *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ौंडर्वन, 1970); और रॉबर्ट ग्रोमज्की, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1974) जैसे कुछ लेखक उसके शासन का समय 37-44 ईस्वी मानते हैं। [3]66 ईस्वी रोम के विरुद्ध यहूदियों के युद्ध के लिए प्रसिद्ध है जिससे रोमी सेनापति टाइटस विवश होकर यरूशलेम में गया और उसने 70 ईस्वी में उस नगर का विनाश कर दिया।